रिकार्ड–तुम्हें पाकर हमने..... ओमशांति प्रातःक्लास 2.1.67

मीठे2 रुहानी बच्चों ने गीत सुना।सारी अपने 84जन्मों की हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर स्मृति में आई।जानते हो हम अभी बाप से वर्सा ले रहे हैं फिर से।यह हिस्ट्री–जॉग्राफी किसी को भी समझानी बहुत सहज है।ल.ना. का चित्र तो सामने है।प्रदर्शनी में भी पहले2 चित्र होता है।मंदिर भी ल.ना. के बहुत बनाते हैं।इन मंदिर बनाने वालों को भी तुम लिख सकते हो कि इन ल.ना. के 84जन्मों की कहानी क्या है?कैसे इन्होंने राज्य पाया?फिर कैसे गुमाया?यह वर्ल्ड ही हिस्ट्री–जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है?कैसे नई से पुरानी ,पुरानी से नई होती है।कैसे फिर इनका राज्य स्थापना हो रहा है।आकर समझो या हम ही आकर आपको समझावें।बाबा ने कितनी बार कहा है मंदिर बनाने वालों से जाकर पूछो।उनको समझाओ।यह वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी जाननी तो बहुत जरूरी है।तुम नालेजफुल बन जावेंगे।हसमें खचे की बात नहीं है।बुद्धि में फुल नालेज आने से फुल वर्ल्ड की राजाई मिल जावेगी।सतयुग के पहले नम्बर में है ल.ना.।बचपन में यह राधा–कृष्ण।इन्होंने यह राजाई कैसे ली?फिर वे राजाई कैसे चली गई?किसने दी?फिर किसने ली?फिर कौन देते हैं?ऐसे2 विचार–सागर–मंथन कर प्रदर्शनी में भी यह समझाना है।फिर से वो ही राजयोग कैसे पा रहे हैं।यह तो बहुत सहज है।भगवानोवाच्य मामेकम् याद करो।बाप को याद करने से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे।जैसे बाप बैठ समझाते हैं वैसे बच्चों को भी समझाना है।बाप ने कहा है मेरे भक्तों को सुनाओ।एक है शिव की भक्ति, दूसरी है ल.ना. की भक्ति।मुख्य यह है।वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी ल.ना. की ही बतावेंगे।शिव की तो नहीं कहेंगे।शिवबाबा इन ल.ना. के 84जन्मों की हिस्ट्री–जॉग्राफी बैठ सुनाते हैं। हिस्ट्री–जॉग्राफी होती ही है जो राज्य लेते हैं और गुमाते हैं।यह विश्व के मालिक कैसे बने फिर राजाई गंवाई कैसे?और कोई को बताना आवेगा ही नहीं।तो बच्चों को प्रदर्शनी में भी इस पर अच्छी रीति समझाना चाहिए।भारत को ही बाप हक देते हैं।शिवबाबा की जयंती भी भारत में ही मनाते हैं।वो है क्रिश्चियन्स की डिनायस्टी ,यह है सूर्यवंशी देवी देवताओं की डिनायस्टी।देवतायें होते ही है सतयुग में।आधा कल्प इन्हों का राज्य चलता है।मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं।इनको समझाने वाले तुम ठहरे।यह यह नालेज तुमको अभ मिलती है।यह वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी बच्चों की बुद्धि में रहनी चाहिए।अभी तुम कहेंगे हमको अपने 84जन्मों की स्मृति आई।बुद्धि में फिरता रहना चाहिए।इन ल.ना. के चित्र पर बहुत अटेंशन देना चाहिए।इसके बाजू में सीढ़ी हो।बड़े2 चित्र हाल में अच्छे शोभते हैं।छोटे चित्रों को डबल2 कर बनाया जाये तो सब बड़े हो जावें।अंदर में आना चाहिए कैसे हम औरों को समझावें?बच्चों को स्कूलों में भी यह सिखाया जाता है।हिस्ट्री–जॉग्राफी के रूप में यह नालेज बताओ।तुम भी स्टूडेंट हो ना।बाप बताते हैं आज से 5000वर्ष पहले भारत स्वर्ग .....।देवी–देवताओं का राज्य था।फिर इनको पुनर्जन्म तो लेना ही है।84जन्म ऐसे2 लिए।पहले2 पावन थे।फिर पतित बनने से राजाई गंवा दी।इसमें लड़ाई की कोई बात नहीं।ना लड़ाई से राज्य लेते हैं।ना लड़ाई से गंवाते हैं।यह तो 84जन्मों का खेल बना हुआ है।तुम एक्टर्स हो ना।तुम ड्रामा को अच्छी रीति जानते हो।इसलिए तुमको खुशी होती है।हमारा इस ड्रामा में सबसे उंच पार्ट है।महावीरता दिखाते हैं ना।हनुमान को महावीर कहते हैं।अभी हनुमान नाम कोई बन्दर का है नहीं।यह तो मनुष्यों ने क्या2 नाम रख दिये हैं।यह बड़ी पेचीदा बाते हैं समझाने की।तुम जानते हो हम बंदर मिसल थे।फिर हमारे द्वारा ही बाप आकर विश्व को इस रावण से छुड़ाते हैं।इस ज्ञान से पहले बरोबर हम बंदर से भी बदतर थे।बुद्धि में फील होता है।माया ने क्या2 बना दिया है।कैसा वंछर है ;परंतु हम भी ड्रामा के वश हैं।ड्रामा में पार्ट है।सारा दिन बुद्धि में यह नालेज फिरती रहनी चाहिए।हम जो पुरुषार्थ करते हैं वो भी ड्रामा अनुसार करना ही है।कल्प पहले भी किया था।यह ड्रामा का राज़ भी बड़ा पेचिला है।नहीं तो कइयों का ड्रामा की बात से माथा खराब हो जाता है।ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ करेंगे।फिर समझा जावे इनका ड्रामा में पार्ट ही नहीं है।साक्षी हो देखते हो।फेल होगा तो पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। ऐसे थोड़े ही विकार में जाते रहें और कहें ड्रामा में ही ऐसा है।

वो तो जानवर मिसल ठहरे।यह बुद्धि से समझने की बातें हैं।बाप कहते हैं देही अभिमानी बनो।कोई भी देहधारी से तालुक नहीं।हमको तो एक बाप को ही याद करना है।अभी है संगम।बाप जरूर संगम पर ही आवेंगे।पुरानी दुनियां को ही पतित दुनियां कहा जाता है।मुख्य बात हे पवित्र बनने की।कुछ भी हो जाये नंगे नहीं होना है।इसका मतलब यह भी नहीं कि आपस में लटकना है ,नाम–रूप में फंस जाना है।आशिक–माशूक कब आपस में लटकते नहीं हैं।सिर्फ एक–दो को देख कर खुश होते हैं।बाकी लटकना आदि कुछ भी नहीं होता है।लटकने वाले में काम विकार का भी अंश आ जाता है।जो नाम–रूप में फंस कर लटकते हैं वो और ही नुकसान कर देता है।वो आशिक–माशूक कब विकार में नहीं जाते हैं।यहां तो माया ऐसी चंचल है जो फीमेल्स आपस में भी एक–दो (साथ) लटक पड़ती हैं।यह बड़ा कड़ा रोग है नाम–रूप में फंसने का।जब तक एक–दो की भाकी ना पहनेंगे ,गोद में ना जावेंगे तब तक नींद नहीं आवेगी।भाकी पहनने बिगर जैसे कि प्राण जाते हैं।यह है माया।अनेक प्रकार के सटके माया कर देती है।तुम बच्चों की तो बुद्धि में आना चाहिए यह पुराना किचरा है।इसमें क्या आसक्ति रखनी है।कोई को भी देह में ना फंसना है।एक बाप को याद करना है।यह मंजिल बहुत भारी है।विश्व का मालिक बनना है।सो भी कैसे सहज बनते हैं।भारत का प्राचीन राजयोग कहते भी हैं;परंतु इससे क्या हुआ, यह कोई समझ नहीं सकते।तुम समझाते हो योगबल से हम विश्व में मालिक बनते हैं।इसमें लड़ाई की कोई बात ही नहीं।पांडवों ने बरोबर राज्य लिया ;परंतु सुप्रीम पंडे साथ योग लगाया तब विकर्म विनाश हुये और दूसरे जन्म में राजाई पद पाया।यह है ही प्रिंस–प्रिसेज बनने की मिशन।जैसे वो राम कृष्ण की मिशन है।वो भी सन्यासी हैं।तुम्हारी यह है ईश्वरीय मिशन मनुष्य जो पतित बन गये हैं उनको श्रीमत पर पावन बनाने की।कहते भी हैं हे पतित–पावन आओ।आकर पावन बनाओ।इसको कहा जाता है पतित को पावन बनाने की। ईश्वरीय मशीनरी।पावन बन कर तुम सब मूलवतन चले जावेंगे।फिर सतयुग में राजाई कहां से आवेगी?पावन दुनियां में राजाई भी चाहिए ना।इसको कहा ही जाता है भारत का प्राचीन राजयोग।जो बाप ही आकर सिखाते हैं।उनको ही बाप,टीचर ,गुरू कहा जाता है।यह बुद्धि में रहने से भी तुमको खुशी बहुत रहेगी।माया के तूफान तो अंत तक आवेंगे।कर्मातीत अवस्था वो अभी कोई पा नहीं सकते।कुछ ना कुछ हिसाब–किताब रहता ही है जो भोगते रहेंगे।लड़ाई आदि की आफतें भी आनी हैं।तैयारी होती जा रही है।रिहर्सल होती रहेगी।आगे भी लड़ाई लगी तो यज्ञ रचे थे।समझा था यह महाभारत लड़ाई है।अच्छा, महाभारत लड़ाई के बाद क्या हुआ यह कुछ भी पता नहीं है।तुम अभी जानते हो विनाश तो होना ही है;परंतु अभी तक हमारी राजधानी ही स्थापन नहीं हुई है।अभी तो देश देशान्तर पैगाम कहां पहुंचाया है।इसके लिए युक्तियां निकालनी चाहिए।।यह प्रदर्शनी तो सब तरफ ले जानी पड़े।फिर प्रदर्शनी के भी इतने सेट चाहिए ना।कोई कारीगर निकले जो कपड़े पर ऐसा अच्छा बनाये जो झट लपेट कर कहीं भी ले जावे।आय सके।6X4 के हों।जैसे बिस्तरा होता है वैसे लपेट कर 6फुट का बिस्तरा बनाने में हर्जा नहीं है।बाबा यह देहली, बॉम्बे, बैंगलौर आदि के बच्चों को डायरैक्शन देते हैं।ऐसे2 चित्र बनाओ।यह सारी सर्विस करने की मिशन चाहिए।कोई कर दिखावे फिर बाबा बहुत तरफ भेज सकते हैं।भेजेंगे भी सर्विसेबुल को जो सयाना हो, दिल पर चढ़ा हुआ हो।सेंटर खोल बहुतों को सुख देंगे।बाकी नाम–रूप में फंसने वाले क्या सर्विस करेंगे।ऐसे भी हैं औरों की सर्विस करते हैं, अपनी करते नहीं।दूसरा उंच पढ़े, ज्ञान देने वाले खुद नीचे हो जावें।यह भी वण्डर है ना।आत्माभिमानी बनते नहीं हैं।बेहद का सन्यास चाहिए दिल से।तुम बच्चे जानते हो यह पुरानी दुनियां खतम होनी है।फिर भी गृहस्थ व्यवहार में रहते तोड़ निभाना है।राजाई लेने में मेहनत है।हर एक बात में सेकिफिकेशन हो।मंज़िल बड़ी उंच है।जो अच्छे2 बच्चे सर्विस में तत्पर रहते हैं उनका सारा दिन खयालात चलता रहेगा।कैसे प्रदर्शनी में समझावें।प्रदर्शनी के मुख्य जो चित्र हैं वो तो बनते ही रहने चाहिए।कपड़े पर बन जावे वह तो (सबसे) ही अच्छा है।इस पर भी ऐसे बनावे

जो कपड़ा खराब ना हो।हमारा काम है ज्ञान से।खूबसूरती की दरकार नहीं है।यह प्रदर्शनी में बिजली आदि का शो करते हैं मनुष्य आवें।हमारे ज्ञान का इन बिजलियों आदि से कनेक्शन नहीं है।हमारा ज्ञान तो है शांति का।हिस्ट्री–जॉग्राफी आकर कोई समझो।स्कूल में कोई बिजली आदि का शो होता है क्या?इसमें.....की कोई दरकार नहीं।यह तो नालेज है ;परंतु आजकल के मनुष्य हैं चह चटा पर।आगे चलकर तुमको बहुत निमंत्रण मिलेंगे कि हमको आकर समझाओ।सीढ़ी वा चित्र, त्रिमूर्ति, गोला, ल.ना. का चित्र यह मुख्य2 जो हैं यह 6X4 का तो जरूर बने।यह सेट तो बनते ही जावे।बहुत सर्विस करनी है।इतना सारा भारत (पड़ा) हुआ है।घर2 में पैगाम पहुंचाना है।हो सकता है अखबारों में भी हमारे चित्र पड़ जावें।कोई की बुद्धि में बैठ जावे।आर्टीफिशल भी बहुत निकलेंगे।चित्रों को कापी कर रखेंगे पैसे कमाने लिए ;परंतु नालेज तो समझाय ना सकें।बच्चों का सर्विस तरफ सारा दिन विचार चलना चाहिए।बाप से बेहद का वर्सा मिलता है तो मेहनत भी करनी चाहिए।बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं।बाकी सब आत्मायें अपने2 सैक्शन में चली जावेंगी।राजधानी स्थापन हो जावेगी।झाड़ में भी तुम समझाते हो।तुम हो ही सन्यासी धर्म के।तुमको राजयोग तो सीखना ही नहीं।फिर माथा मारने की क्या दरकार है?आगे चलकर कोई सन्यासी भी निकलेंगे।यह भी नूंध है।तो बच्चों को शौक होना चाहिए समझाने का।बैचलर्स जो हैं उनके उपर तो कोई बोझा नहीं है।गृहस्थियों को तो बच्चों आदि की पालना करनी होती है।नहीं तो उनको कौन सम्भालेगा?बाकी वानप्रस्थी है अथवा कुमारियां हैं उन पर कोई बोझा नहीं।जवान बच्चे भी मुश्किल ठहर सकते हैं।माताओं में धैर्य जास्ती होता है।पुकारती भी मातायें हैं।पुरुष निर्लज्ज होते हैं।माताओं में लज्जा होती हैं।इसलिए पुकारती भी हैं कि नंगा होने से बचाओ।कितना दुःख सहन करती हैं।कन्याओं का सौभाग्य जास्ती है।कुमारी अगर पवित्र रहना चाहती है तो माता–पिता भी कुछ कर नहीं सकते हैं ;परंतु सिर्फ हिम्मत चाहिए समझने की।जितनी छोटी कुमारी उतना नाम बाला करेगी।जो युगल गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहते हैं उनका भी नाम गायन होता है।बाप का हुक्म हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो।फिर आप समान बनाना है।सेवा तो करनी है ना।भारत की सच्ची रुहानी सेवा तुम करते हो।पतित को पावन बनाने का रास्ता तुम बताते हो।तुम कह सकते हो हम रामराज्य स्थापन करने पवित्र बनते हैं श्रीमत पर।भगवानोवाच्य काम महाशत्रु है।हम भगवान उस निराकार को मानते हैं।बाकी यह शास्त्र आदि तो सब भक्तिमार्ग के हैं।इनमें कोई (तंत) ही नहीं।ज्ञान का सागर पतित–पावन सद्गति दाता एक ही बाप है।यह शास्त्र आदि सब हमारे सुने हुये हैं ;परंतु बाप कहते हैं यह सब भक्तिमार्ग के हैं।भक्त बुलाते हैं कि आकर सद्गति करो।भक्ति का फल दो या दुःख से छुड़ाओ।दुःख तो बहुत हैं ना।सुखधाम में ऐसी बातें होती नहीं।यह है दुःखधाम।कांटों का जंगल।कितने बड़े2 जंगल हैं।जंगल में जंगली जानवरों मिसल मनुष्य रहते हैं।स्वर्ग को कहा जाता है फूलों का बगीचा।वो लोग बड़े2 दिनों पर खुशी मनाते हैं।तुम तो रोज़ खुशी में रहते हो।तुमको खजाना मिल रहा है।तुम विश्व की बादशाही प्राप्त करने लिए गुप्त पुरुषार्थ कर रहे हो।तदबीर तो बहुत कराते रहते हैं ;परंतु किसी की तकदीर में भी तो हो ना।ब्राह्मण कुलभूषणों में कोई छुपा नहीं रह सकता।कौन अच्छा पुरुषार्थ करते, बहुतों को रास्ता बताते हैं तुम देखते रहेंगे।दिन–प्रतिदिन किसी को समझाना भी सहज हो जावेगा।सिर्फ आत्मा का ज्ञान भी तुम किसी को बैठ सुनाओ तो सुनकर बहुत खुश होंगे।दुनियां में तो कोई नहीं जो आत्मा का ज्ञान दे सकें।आत्मा क्या है?कैसे इनमें 84जन्मों का पार्ट भरा हुआ है।यह अभी तुम्हारी बुद्धि में है।यह पार्ट अविनाशी है।अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करने में ही मेहनत है।बड़ी महीन बात है।हम आत्मा बिंदी।बाबा भी आत्मा है।उसका भी पार्ट भरा हुआ है।यह हिस्ट्री–जॉग्राफी भारत की ही है।बाकी जो बाद में आते हैं उनकी हिस्ट्री–जॉग्राफी तो क्लीयर है।तुम अभी समझते हो हमने, कैसे राज्य गंवाया है।फिर लेते हैं।बाकी बीच में है बाइप्लाट्स।यह हिस्ट्री–जॉग्राफी किसी को समझाते रहेंगे तो भी बहुत खुशी में रहेंगे।अच्छा, ओम।